नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

परंपरा और नवाचार के बीच कथक में फ्यूज़न/ कंटेम्परारी प्रयोग पर परंपरागत गुरुओं के दृष्टिकोण

प्राजक्ता लक्ष्मीकांत उपरकर
भारती विद्यापीठ (डीम्ड यूनिवर्सिटी), पुणे (डांस डिपार्टमेंट)

सार-संक्षेप

'कथक', भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक, सदियों से परंपरा और नवाचार के संतुलन में विकसित होती रही है। समकालीन मंच पर फ्यूज़न/ कंटेम्परारी — अर्थात कथक का अन्य नृत्य रूपों, संगीत शैलियों तथा आधुनिक प्रस्तुति तकनीकों के साथ संयोजन — वरिष्ठ गुरुओं के बीच विचार-विमर्श का प्रमुख विषय है। अधिकांश गुरु इस बात पर सहमत हैं कि फ्यूज़न केवल आकर्षण या लोकप्रियता के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि तभी किया जाए जब प्रस्तुति की विषय-वस्तु, संदर्भ और कलात्मक आवश्यकता इसकी माँग करें। उनका मानना है कि किसी भी प्रकार के फ्यूज़न में कथक का शास्त्रीय व्याकरण, लय, भाव एवं सौंदर्यशास्त्र सुरक्षित रहना अनिवार्य है। परंपरावादी गुरु कथक की मूल तकनीक, सूक्ष्म पद-संचालन, लयबद्ध संरचना, कथा-वाचन और गुरु-शिष्य परंपरा में निहित आध्यात्मिकता के संरक्षण को अनिवार्य मानते हैं। इस शोध में परंपरा और नाविन्यता के संदर्भ पर विचार करते हुए पं. बिरजू महाराज, पं. रोहिणी भाटे, पं. राजेंद्र गंगानी, डॉ. पुरु दधीच, पं. शमा भाटे, अदिति मंगलदास जैसे गुरुओं के दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कथक का सतत विकास 'अनुशासित रचनात्मकता' में निहित है, जहाँ परंपरा की जड़ों को संरक्षित रखते हुए विचारपूर्ण और संवेदनशील प्रयोग को स्थान दिया जाए। संवेदनशीलता, कलात्मक ईमानदारी और परंपरा की समझ के साथ किया गया नवोन्मेष, कथक को प्रासंगिक बनाए रखते हुए उसकी शास्त्रीयता को भी संरक्षित कर सकता है।

मुख्य शब्द : कथक । परंपरा । नवाचार । गुरु दृष्टिकोण । फ्यूज़न

शोध-पत्र

भूमिका

"विनोदकारणं चेति नृत्तमेतत्प्रवर्तितम् ।।"

आचार्य भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र (अध्याय 4, श्लोक 266)

अर्थात – नृत्त से प्रदर्शन की शोभा बढ़ती है और यह आनंदमूलक भी है।

प्रतिभा सर्वशास्त्रनाम मूलं सर्वार्थ साधनम ।।"

-काव्यालंकारा(भामाहा परम्परा)

अर्थात – प्रतिभा (रचनात्मक प्रतिभा) समस्त कलाओ और ज्ञान का मूल है।

न ही शास्त्रविहिनोऽस्ति योगः कर्म न च क्रिया।

अर्थात – शास्त्र के बिना न तो कोई साधना संभव है और न ही कोई कला।

नृत्य की असली जड़ें मंदिरों में, भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के नाट्य रूपांतरण में तथा मुग़ल जीवन शैली के असर से दरबारी मंचनों में मिलती हैं। बदलते युग, भौगोलिक परिवर्तनों, उपनिषदकालीन और मुग़ल स्थापत्य के योगदान ने कथक को विभिन्न रंगों और भंगिमाओं से भर दिया। परंपरा यह सुदीर्घ काल से विभिन्न तटों को छूती और बहती आ रही 'कला-सरिता' का शाश्वत स्वरूप है, जहाँ इसमें अनेक तटों से मिली मिट्टी, लवण और स्वाद है। वहीं वर्तमान में कुछ नया जोड़ने/ घोलने की सहज प्रक्रिया भी इसमें निहित है। नृत्य के संदर्भ में हम 'परंपरा' शब्द का प्रयोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों को रेखांकित करते हुए करते हैं।

परंपरा आज कथक नृत्य में केवल पारंपरिक मंचों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह फ्यूज़न (कंटेम्परारी), आधुनिक मंच तकनीकों और समकालीन विमर्शों के साथ वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत विषय कथक से संबंधित है, अतः यहाँ नवाचार विशेष रूप से कथक नृत्य पर केंद्रित है।

आधुनिक समय में सामाजिक बदलावों, डिजिटल प्लेटफार्मों, वैश्विक संवाद और समकालीन विषयों की प्रस्तुति के चलते कथक में प्रयोगशीलता की प्रवृत्तियाँ देखी जा रही हैं। परंतु परंपरा और नये

आविष्कार के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यह शोधपत्र इसी संतुलन पर केंद्रित है और यह समझने का प्रयास करता है कि परंपरा को नष्ट किए बिना नव निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है।

अधिकांश गुरु इस बात पर सहमत हैं कि फ्यूज़न केवल आकर्षण या लोकप्रियता के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि तभी किया जाए जब प्रस्तुति की विषय-वस्तु, संदर्भ और कलात्मक आवश्यकता इसकी मांग करें। उनका तर्क है कि अनियंत्रित फ्यूज़न शास्त्रीयता की प्रामाणिकता एवं सौंदर्यशास्त्रीय अनुशासन को क्षीण कर सकता है, विशेषकर तब जब वह कथक की पहचान और सांस्कृतिक अस्मिता को कमजोर करने लगे।

इसके विपरीत, नवोन्मेषीय-समर्थक गुरु कथक के ऐतिहासिक अनुकूलनशील स्वरूप का हवाला देते हैं—भक्ति आंदोलन से लेकर मुग़ल दरबारी प्रभाव तक—और इसे वर्तमान पीढ़ी व वैश्विक दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाए रखने हेतु फ्यूज़न को समकालीन दर्शकों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम मानते हैं, बशर्ते यह संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण हो।

इस अध्ययन में कथक में फ्यूज़न पर परंपरावादी गुरुओं के दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया गया है, जिससे कथक की आत्मा में परंपरा और नवाचार के संतुलन को समझा जा सके।

शोध समस्या

वर्तमान में कथक का फ्यूज़न स्वरूप और उसमें निहित नव कल्पना गंभीर विमर्श का विषय है, जिसमें कई शोध समस्याएँ दृष्टिगत होती हैं, जैसे –

- फ्यूज़न करने की आवश्यकता क्या है?
- क्या फ्यूज़न का प्रयोग हमारी परंपरा को नष्ट कर देगा?
- क्या फ्यूज़न कथक की आत्मा को प्रभावित करता है?
- परंपरावादी गुरुओं और समकालीन कलाकारों का नवाचार पर क्या दृष्टिकोण है?
- परंपरा और आधुनिकता में संघर्ष है या संवाद?
- परंपरा और नवता का संतुलन कैसे स्थापित करें?
- कथक में नव निर्माण की भूमिका और उसकी सीमाओं को समझना क्यों आवश्यक है?

कथक में कई नये प्रयोग किये जाने लगे है, लेकिन अनेक कलाकारों और दर्शकों में यह चिंता है कि कहीं नये आविष्कार परंपरा को कमजोर न कर दे। सवाल यह है कि कथक में परंपरा और नवाचार के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया जाए ताकि नृत्य की शास्त्रीयता और सांस्कृतिक पहचान बनी रहे और साथ ही समकालीन समाज में इसकी प्रासंगिकता भी बढ़े।

क्या कंटेम्परेरी और फ्यूज़न दोनों एक ही प्रणाली है?

नृत्य के सन्दर्भ में फ्यूज़न शब्द कंटेम्परेरी के समानार्थी नहीं है, बल्कि यह शैलियों के मिश्रण को दर्शाता है। फ्यूज़न का अर्थ दो या अधिक नृत्य शैलियों अथवा गतियो की प्रणालियों का संयोजन है, जिसके माध्यम से एक मिश्रित नृत्य शैली का निर्माण होता है। इसके विपरीत कंटेम्परेरी स्वयं एक स्वतंत्र आधुनिक नृत्य विधा है जो मॉडर्न बैले तथा वर्तमान समय की संवेदनाओ और विषय वस्तु को अभिव्यक्त करता है।

सन 1940 से 1960 में फ्यूज़न शब्द नृत्य के आधुनिक सन्दर्भ में प्रचलित नहीं था। 1910 के आसपास जैज़ मिश्रण देखने मिला लेकिन शब्द कालांतर स्वरूप आया।

भारतीय नृत्य परम्परा में शैलियों के मिश्रण की प्रक्रिया बीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध में ही दिखाई देती है, विशेषतः पंडित उदय शंकर एवं रविंद्रनाथ ठाकुर जी के नृत्य प्रयोगों में। उस समय इसे फ्यूज़न नहीं कहा गया बल्कि 'नव-प्रयोग' अथवा 'प्रयोगात्मक नृत्य' की संज्ञा दी गयी। फ्यूज़न शब्द का प्रचलन मुख्यतः बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्वीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ बढ़ा। फ्यूज़न शब्द नृत्य को युवा दर्शको के लिए प्रासंगिक बनाता है, पर शुद्धतावादियो द्वारा विवादास्पद है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य यह है कि नये फ्यूज़न जैसे कंटेम्परेरी, बैले, वेस्टर्न परकशन, समकालीन विषय, बॉलीवुड फ्यूज़न, अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों का संमिश्रण, आधुनिक विषयों पर आधारित प्रस्तुति आदि प्रयोग किस सीमा तक ले जाना उचित है, इस बारे में परंपरागत गुरुओं के दृष्टिकोण जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है, ताकि सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखते हुए इसे समकालीन समाज में प्रासंगिक बनाया जा सके।

कथक इस शास्त्रीय परंपरा की संरचना, सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक महत्त्व का विवेचन करना; डिजिटल माध्यमों और समकालीन विषयों का कथक पर प्रभाव जानना; कथक की मूल संरचना का गुरुओं की शिक्षाओं एवं आलोचनाओं के माध्यम से अध्ययन करना; परंपरा एवं नवाचार के बीच संतुलन को समझना; पारंपरिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए फ्यूज़न के तकनीकी, भावात्मक व सौंदर्यशास्त्रीय प्रभावों का मूल्यांकन करना; वैश्विक मंचों पर कथक के विस्तार में पारंपरिक एवं आधुनिक दृष्टिकोणों की भूमिका आदि उद्देश्यों को साझा करने का यह प्रयास है।

परंपरा और नवाचार विरोधी नहीं हैं। रचनात्मकता की ज्योति को जलाए रखने के लिए कलाकार को विषय, व्याख्या और अभिव्यक्ति में निरंतर नये आविष्कार करते रहना चाहिए, जिससे नृत्य कठोर, यांत्रिक या दोहरावपूर्ण न हो और परंपरा के साथ विकास करता रहे।

परंपरा की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए यदि कथक में नवाचार निष्ठा, साधना और अनुशासन से किया जाए तो वह नृत्य को अधिक प्रासंगिक, जीवंत और वैश्विक बन सकता है, कथक को समकालीन संदर्भों में विस्तार देता है और परंपरा को समृद्ध करता है। जैसे कथक और पश्चिमी वाद्ययंत्रों का संगम एक सृजनात्मक और समृद्ध कला की ओर अग्रसर है। इन्हीं परिकल्पनाओं द्वारा इस शोधपत्र को आगे बढ़ाया जाएगा।

इस अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट किया जा सकता है कि परंपरा और नवाचार के बीच संवाद स्थापित कर कथक की सौंदर्यात्मकता, सामाजिक संदेश और वैश्विक पहचान को समझाने में यह अध्ययन मदद करेगा। यह शोध नई पीढ़ी तक शास्त्रीय नृत्य को पहुँचाने के लिए आवश्यक संतुलन को स्पष्ट करेगा। जिससे न केवल नृत्य की शास्त्रीयता सुरक्षित रहेगी, बल्कि यह समकालीन दर्शकों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। डिजिटल शिक्षा, मंचीय प्रयोग और समकालीन विषयों के समावेश से कथक की लोकप्रियता और व्यावहारिक उपयोगिता बढ़ेगी। इस शोध से नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और कलाकारों को मार्गदर्शन मिलेगा।

यह अध्ययन गुणात्मक, आलोचनात्मक, और साक्षात्कार आधारित पद्धति से किया गया है। विभिन्न गुरुओं द्वारा दिए गए व्याख्यान, वीडियो, प्रकाशित लेख, साक्षात्कार और डिजिटल मंचों का अध्ययन किया गया। पंडित बिरजू महाराज, पंडित राजेंद्र गंगानी, पंडिता शमा भाटे, अदिति मंगलदास जैसे गुरुओं के विचारों का विश्लेषण कर यह देखा गया कि कथक में नये आविष्कार किस प्रकार संभव है। प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन कर परिणाम प्रस्तुत किए गए।

"गुरु बिन कौन बतावे बाट?" – पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु का स्थान अत्यंत सन्माननीय है, जिनके कारण प्राचीन एवं अमूल्य रचनाओं की धरोहर हम तक पहुँचती है। गुरु न केवल नृत्य की तकनीक सिखाते हैं, बल्कि शिष्य को आत्म-नियंत्रण, समर्पण और साधना की ओर भी मार्गदर्शन करते हैं। समर्पण, साधना और आहुति द्वारा किया गया नवोन्मेष आविष्कार तो होगा ही! इसी कारण परंपरागत गुरुओं के दृष्टिकोण साझा करना महत्त्वपूर्ण है।

नवाचार विषय पर परंपरावादी गुरुओं के दृष्टिकोण

पंडित बिरजू महाराज

"Do you dance today what you danced 50 years ago? For an artist it is really important to be alive to the now."

उनका कथन है कि कथक को निरंतर समयानुकूल ढलते रहना चाहिए, पर उसके मूल में 'भाव' और 'लय' की शुद्धता बनी रहनी चाहिए (महाराजजी)।

पंडित राजेंद्र गंगानी

"कई लोग ऐसा करते हैं कि यह प्रदर्शन की कला है तो इसमें इतने ज्यादा प्रयोग करते हैं कि उसको अपनी ओरिजिनालिटी से हाथ धोना पड़ जाता है। अगर ऐसा न हो और उसकी गरिमा को कायम रखते हुए, गुरुजी ने सिखाया है उसमें आप नए आयाम जोड़ सकते हैं। उसकी तिहाइयाँ बढ़ जाती हैं, उसके स्वरूप बढ़ जाते हैं, एक तोड़ा सिखाया तो उसके चार तोड़े हो जाते हैं, लेकिन कम से कम उसके स्वरूप को कायम रखो। जो लोग इससे भर हो गए वो सीमित होते-होते शुद्ध से असीमित हो गए।" (गंगानी, 6–10)

उनके दृष्टिकोण से ताल-लय व भाव-संपदा की शुद्धता को वे कथक की आत्मा मानते हैं। वे कहते हैं कि नवाचार तभी स्वीकार्य है जब वह मूल अनुशासन व परंपरा का सम्मान करता हो।

कुमुदिनी लाखिया

परंपरा के बीज को समकालीन संवेदनाओं से सिंचकर नया वृक्ष उगाने की पक्षधर। उनकी अभिव्यक्ति 3D मंच चित्रण और समावेशी कथन में है। (यूट्यूब लिंक से साक्षात्कार)।

गुरु पं. रोहिणी भाटे

"But for me, it is important to help nurture every aspect of the form, its abhinaya, its technique, its grace as well as its theory. I'm not suggesting that tradition should be deliberately swept aside for new styles. What I'm saying is that if there is a natural evolution of a form, it should be allowed to change & grow." (भाटे, 276–277) उनका कथन है कि कलाकारों को परंपरा के संवर्धन के साथ-साथ कलात्मक प्रयोग करने चाहिए।

डॉ. पुरु दधिच

वैश्विक स्तर पर कथक में नई पहल की आवश्यकता को स्वीकारते हैं, लेकिन साधना और अनुशासन के बिना उसे अधूरा मानते हैं। (दधिच जी से साक्षात्कार)।

पंडिता शमा भाटे

वे परिवर्तन को केवल दिखावे के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद, समकालीन संदर्भ और वैश्विक संवाद के लिए आवश्यक मानती हैं। उन्होंने अपनी नृत्य संरचना में कई नए प्रयोग किए जैसे – जैज़ संगीत, दक्षिणात्य संगीत का प्रयोग, कंटेम्पररी समकालीन विषय आदि। उनका दृष्टिकोण है कि परंपरा और नवाचार में संघर्ष के बजाय संवाद होना चाहिए (भाटे)। उदाहरनार्थ : उनकी समकालीन नृत्यसंरचना–

चतुरंग की चौपाल - नाट्यशास्त्र में उल्लेखित नाट्यगृह का नवोन्मेष के साथ प्रयोग

अतीत की परछाईयाँ - अलग अलग शास्त्रीय नृत्य शैलीयो द्वारा महाभारत की कथा का वर्णन

नृत्य संरचना-अतीत की परछाईयाँ (संक्षेप)

इस नृत्य संरचना में महाभारत के प्रमुख प्रसंगों को अत्यंत सृजनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुति की विशेषता यह रही की मुख्य पात्रो को विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों के माध्यम से दर्शाया गया, जिससे प्रत्तेक चरित्र की प्रकृति और भाव अधिक प्रभावशाली रूप में उभरकर सामने आये। प्रत्तेक नृत्य शैली की वेशभूषा, संगीत उसी शैली की परम्परा के अनुरूप रखी गयी थी, जिससे दृश्यात्मक सौंदर्य में वृद्धि हुई और हर शैली की पहचान बनी रही। मंच पर प्रस्तुत दृश्य दर्शको के मन में महाभारत के प्रसंगों की सजीव अनुभूति कराते थे और यह प्रस्तुति भावनात्मक रूप से भी दर्शको को स्पर्श करने वाली सिद्ध हुई। कुल मिलकर, यह नृत्य रचना भारतीय महाकाव्य महाभारत को बहुशैलीय शास्त्रीय नृत्य के माध्यम से नवोन्मेष करने का प्रयास प्रभावशाली रहा।

अदिति मंगलदास

उनका मानना है कि कथक समय, संस्कृति और भूगोल के साथ बदलता है; "निरंतर प्रवाहमान रचनात्मकता" इसकी आत्मा है। "Protectionism is the main cause of conflict in creativity. Sometimes things are added on, sometimes they don't have meaning, they wisely stick to the ground & become part of tradition." (मंगलदास, साक्षात्कार)

पंडित सुरेश तलवलकर

गुरुजी अपने साक्षात्कार में कहते हैं कि "परम्परा में नवता का रहना आवश्यक है परन्तु उस परम्परा में नवाचार की झालर ना हो तो वह परम्परा जिवंत न रहकर जड़ और अप्रासंगिक हो जाती है।

कमलादेवी चटोपाध्याय

उनका कथन है कि "The artist to keep the creative flame alive has to be innovative in theme, interpretation and meaningful so that the dance does not become a rigid repetitive format."

परंपरावादी सोच नए प्रयोगों को अस्वीकार नहीं करती, बल्कि शास्त्रीय अनुशासन, भाव-शुद्धता तथा स्थिरता की सीमा तय करती है (लाखियाजी)। कथक की परम्परा ताल, लय और रियाज़ पर आधारित है परन्तु सामाजिक बदलाओ और डिजिटल युग के कारण इसमें फ्यूज़न का प्रयोग बढा है। गुरु-शिष्य परंपरा के मार्गदर्शन में, जब कलाकार शुद्ध भाव, संकल्पना व ताल-लय के शास्त्रीय स्वरूप के साथ नवीन प्रयोग करता है, तभी नवाचार प्रासंगिक और समृद्ध होता है (गंगानी)। उदाहरणार्थ–पंडिता शमा भाटे जी की 'चतुरंगी की चौपाल' जैसी नृत्यसंरचना जिसमें नाट्यशास्त्र में उल्लेखित प्रेक्षागृह के प्रकार का प्रयोग नाविन्यता से किया है, जिससे सह्रदय प्रेक्षक चारो दिशाओ से नृत्य की प्रस्तुति का आस्वाद ले सकते है।

कथक में नवाचार के अधिकांश उदाहरण आधुनिक मंच प्रस्तुतियों, विदेशी साझेदारी, वैश्विक प्रभाव, नायक-नायिका, तराने, ठुमरी और ताल संरचना के साथ मंच की लाइटिंग, मिक्स-मीडिया का उपयोग, पाश्चात्त्य संगीत, और सामाजिक विषय जैसे स्त्री सशक्तिकरण, आधुनिक लेखन अथवा कविता को कथक नृत्य के साथ जोड़ना, कंटेम्परारी और फ्यूज़न की प्रस्तुति में उपलब्ध हैं। (उदाहरणार्थ 1. अदिति मंगलदास जी की नृत्यसंरचना–"Within"), (उदाहरणार्थ 2. द्वापर युग में कालिया नाग के विष से यमुना नदी दूषित हुई थी। आजभी यमुना दूषित ही है! केवल कृष्ण वर्त्तमान युग में दुसरे रूप में होंगे!)

समकालीन और फ्यूज़न कोरियोग्राफी की वर्त्तमान प्रवृत्तियाँ

फ्यूज़न नृत्य संरचनाओ का जब अभ्यास किया गया तब देखा गया की फ्यूज़न प्रस्तुतियोमे कत्थक, भरतनाट्यम आदि शैलियों को कंटेम्परारी मूवमेंट्स, पश्चिमी तकनीको तथा इलेक्ट्रोनिक्स या रिमिक्स संगीत के साथ संयोजित किया जा रहा है। शास्त्रीय मुद्राओ और आधुनिक देह भाषा का मिश्रण, संगीत में राग आधारित संरचना के साथ आधुनिक बिट्स का प्रयोग होता है। जो प्रस्तुति परम्परा और आधुनिकता के सेतु का कार्य करती है वह प्रस्तुति दर्शकगण अधिक स्वीकार करते है। जहा गति विन्यास अधिक मुक्त, प्रयोगधर्मी और अमूर्त होता है और जब तकनीक नृत्य से अधिक प्रभावी हो तब वह सामान्य दर्शको तक नहीं पहुच पाता है।

समग्र मूल्यांकन

पक्ष	दर्शको की प्राथमिकता
कथात्मकता	अधिक स्वीकृत
परम्परा + नवीनता	अत्यंत लोकप्रिय
अत्यधिक अमूर्त प्रयोग	सिमित वर्ग तक सिमित
भावनात्मक जुडाव	दर्शको के ह्रदय को छु लेता है
बॉलीवुड फ्यूज़न	परम्परा को नष्ट कर सकता है

समकालीन कलाकार नई पीढ़ी तक कथक पहुँचाने के लिए नवाचार का समर्थन करते हैं। आज के समय में कथक के नए कलाकारों को प्रस्तुति के कितने अवसर मिलते हैं? यदि उनकी उपजीविका केवल कथक नृत्य पर निर्भर है, तो क्या उन्हें समय की माँग के अनुसार नवाचार अपनाना चाहिए? दर्शकों की रुचि और माँग के अनुसार आविष्कार करना आवश्यक है, ताकि यह कला जीवित रहे और अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे। आज प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है, इसलिए कलाकार को नए विचार अपनाकर प्रस्तुति में श्रेष्ठ देना होगा। यदि हम केवल पारंपरिक तरीकों पर ही टिके रहेंगे, तो आगे नहीं बढ़ पाएँगे और दर्शकों तक

अपनी कला का संदेश नहीं पहुँचा सकेंगे। इसलिए नया दृष्टिकोण अपनाना आज की आवश्यकता है बशर्ते इन आविष्कारो में परम्परा की जड़ो का संरक्षण हो।

बॉलीवुड फ्यूज़न के बारे में बात की जाए तो कई परम्परागत गुरुजन इसका विरोध करते है। उनके मत से नवाचार करते समय कथक का आत्मा अक्षय रहना चाहिए, उसे कोई हानी नहीं पहुचनी चाहिए। मार्केटिंग और मनोरंजन में आशय ही ख़त्म हुआ तो क्या होगा? जो ज्यादा हमें सिर्फ एंटरटेन करने लगते है तो उसमे हम प्रेक्षकों को अशिक्षित करते है, उनका नुकसान करते है। 'Legacy is not leaving something for people, it is leaving something in people' रचना की मौलिकता एवं रचना की सोच का मिलन ही शास्त्रीय कलाओ की खूबसूरती है।

निष्कर्ष / शोध परिणाम

अध्ययन से स्पष्ट है कि –

- परंपरा की जड़ों का सम्मान करते हुए ताल, लय, भाव और संरचना की शुद्धता को बनाए रखते हुए नवाचार किए जा सकते हैं।
- गुरुओं की भूमिका नये दृष्टिकोण की दिशा तय करने में महत्त्वपूर्ण है।
- डिजिटल माध्यमों, सामाजिक विषयों और मंचीय प्रयोगों के जरिए कथक को समकालीन दर्शकों तक पहुँचाना संभव है।
- समकालीन प्रयोगों में कथक केवल पारंपरिक मंचों तक सीमित न रहकर, समाज के नए विमर्शों व वैश्विक समस्याओं को भी चित्रित करने का सशक्त माध्यम बना है।
- इसके लिए अनुशासन, साधना और गुरु–शिष्य परंपरा की निरंतरता को बनाए रखना अनिवार्य है।

यह संतुलन कथक को न केवल संरक्षित करेगा बल्कि इसके विस्तार और लोकप्रियता में भी योगदान देगा। हमें परंपरा को जकड़ना नहीं है, बल्कि उसकी जड़ों से जुड़कर पंख फैलाना है। नई दृष्टि से कला को संप्रेषित करना सच्चा नवाचार है। गुरुओं के मार्गदर्शन में, भले ही समकालीन कथा जोड़ी जाए, यदि अभिनय, ताल, लयबद्धता और भाव शुद्ध तथा समर्पित हो तो वह परिवर्तन शास्त्रसम्मत माना जा सकता है। परंपरा और नवोन्मेष का संवाद ही कथक को समृद्ध, जीवंत और वैश्विक बनाता है।

कथक में नवाचार का स्वागत है, परंतु उसे परंपरा का सम्मान करते हुए शास्त्रीय अनुशासन के भीतर रहकर करना चाहिए। अनुशासन, साधना और संवेदनशीलता के साथ किया गया नवाचार कथक की पहचान को नई ऊँचाई देता है।

"परंपरा की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए जब कलाकार नवाचार करता है, तब वह कला जीवित, प्रासंगिक और व्यापक बनाती है।"

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज़ाद, तीरथराम, नर्तन : शब्द का मूलरूप, कत्थक ज्ञानेश्वरी, श्लोक संख्या 16, दिल्ली, नटेश्वर कला मंदिर, 2008, पृष्ठ क्र. 86.
2. कुलश्रेष्ठ, मनीषा, नवसृजित का व्याकरण और तकनीक, बिरजू लय, दिल्ली(महाराष्ट्र), नई किताब प्रकाशन, रजा फाउंडेशन, 2018.
3. गंगानी, राजेंद्र, Interview Pt. Rajendra Gangani, कलात्म (Artistic Diversity is Idea of India), पुणे महाराष्ट्र, Mind & Media Publication, 2016, पृष्ठ क्र. 6-10.
4. बोकिल-कुलकर्णी, वंदना, नवतामुपैती, रोहिणी निरंजनी, आवृत्ति 1, पुणे महाराष्ट्र, राजहंस पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, 2021, पृष्ठ क्र. 276-277.
5. भाटे, शमा, प्रत्यक्ष साक्षात्कार, 2025.
6. मंगलदास, अदिति, In Pursuit of Excellence-Kathak Contemporary Connection, Sahapedia, 18 जून, https://youtu.be/t0yY37U6BIs?si=5RKCO8ig_jeOchVx.
7. लाखिया, कुमुदिनी, कथकः Tradition Meets Modernity, कथक फाउंडेशन, 2021, पृष्ठ क्र. 87–90.
8. शास्त्री,बाबूलाल, अध्याय 4, श्लोक संख्या 266, नाट्यशास्त्र, भाग 1, नई दिल्ली, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 2017.
9. तलवलकर, सुरेश, प्रत्यक्ष साक्षात्कार, 2025